International Journal of Social Science and Humanities
www.humanitiesjournals.com
ISSN: 2664-8628
Received: 11-09-2026, Accepted: 11-10-2026, Published: 26-10-2026
Volume 8, Issue 4, 2026, Page No. 41-43

भगवतीचरण वर्मा की कहानियों में चित्रित उपेक्षित निम्न वर्ग

डॉ. लावण्या एस
सहायक आचार्य, भाषा विभाग, एम.ओ.पी. वैष्णव महिला महाविद्यालय, चेन्नई, तमिलनाडु, भारत
DOI: https://doi.org/10.66856/ijssh.2026.8.4.8151

सारांश
भगवतीचरण वर्मा प्रेमचन्दोत्तर युग के श्रेष्ठ रचनाकारों में गिने जाते हैं। उनका हिन्दी साहित्य में पहला कदम कविता–लेखन से आरंभ हुआ। प्रत्येक साहित्यकार का उद्देश्य अपने अनुभवों और अपने समय की परिस्थितियों को रचनाओं के माध्यम से पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करना होता है। वर्मा जी ने भी इसी उद्देश्य को अपना साहित्यिक दायित्व मानते हुए अनेक रचनाएँ लिखीं। उनकी रचनाओं की विशेषता उनकी सरल भाषा और व्यंग्यात्मक शैली है उनकी कहानियाँ समाज के यथार्थ को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती है, लेकिन वे इस यथार्थ को विनोदमय शैली में अभिव्यक्त करते हैं। परिणामस्वरूप पाठकों की कहानी पढ़ने में रुचि बढ़ती है और वे उसमें निहित गंभीर विषयों पर विचार करने के लिए प्रेरित होते हैं। इस तरह वर्मा जी ने कहानी विधा को उसके मूल तत्वों से विचलित होने से बचाया है। उन्होंने छोटी कहानी के संदर्भ में यह विचार प्रकट किया है किरू इस छोटी कहानी की आधार भूमि चुटकुलों गपों या दृष्टान्तों पर ही नहीं जीवन की वास्तविक घटनाओं पर भी है। जीवन में नित्य प्रति घटने वाली घटनाओं में अनगिनती कहानियों मिल सकती है पर जो कठिन काम है वह है इन घटनाओं का मनोरंजक ढंग से वर्णन और इन घटनाओं में संवेदना उत्पन्न करने की क्षमता।[1]
भगवतीचरण वर्मा जी की कहानियों में व्यक्ति और समाज के पारस्परिक संबंध, धन के प्रति लालसा, सामाजिक असमानता, मानवीय मूल्यों का ह्रास और अभाव–ग्रस्त जीवन का सजीव चित्रण मिलता है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष जैसे चार पुरुषार्थ से जीवन संतुलित होने की बात इनकी कहानियों में स्पष्ट रूप से व्यक्त किया गया है। भगवतीचरण वर्मा जी ने उनकी कहानियों को नीरस न बनाते हुए उच्च आदर्शों की स्थापना की है। इनकी कृतियों में मौलिकता है, युग–परिवेश को उद्भासित करने का कौशल है। इसके अतिरिक्त – असाधारण पठनीयता के गुण के कारण भी इनका साहित्य लोकप्रिय और प्रासंगिक है।[2]
भगवतीचरण वर्मा के रचना काल में देश की राजनीतिक और आर्थिक परिस्थितियाँ सुखद और शांतिपूर्ण नहीं थी। स्वतंत्रता पाने के लिए देश–भक्त चारों ओर राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय हो रहे थे। समाज में भिक्षावृत्ति, गरीबी, बेरोजगारी, प्रवास, आर्थिक भ्रष्टाचार और जमीन्दारों द्वारा निम्न वर्ग का शोषण देखा जा सकता है। प्रस्तुत शोध–आलेख में उनकी महत्वपूर्ण पाँच कहानियों – दो पहलू, कुँवर साहब का कुत्ता, खिलावन का नरक, कायरता और उत्तरदायित्व को लिया गया है। इन कहानियों में वर्मा जी ने निम्नवर्ग के लोगों का शोषण और उनकी संवेदनाओं का यथार्थ चित्रण किया है।

मूल शब्दः उपेक्षित निम्न वर्ग भिक्षावृत्ति, बेगारी, बेरोजगारी, निर्धनता

भीख माँगना बुरा है और भीख देना भी उचित नहीं माना जाता। मनुष्य को अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति परिश्रम के माध्यम से करनी चाहिए। यदि कोई व्यक्ति भीख मांगने के लिए विवश हो जाए, तो समाज के प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्तव्य बनता है कि वह उसकी मजबूरी को समझे और उसकी सहायता करें। लेकिन नयी सदी में भी अमीरी और गरीबी के बीच का अंतर समाप्त नहीं हुआ है। भिक्षावृत्ति की समस्या को वर्मा जी ने अपनी कहानी दो पहलू में चित्रित किया है। इस कहानी का गरीब वृद्ध कोढ़ी की बीमारी से पीड़ित है और विवश होकर मंदिरों के बाहर भीख मांगता है। लेकिन उस पुण्य–स्थल में भी किसी ने उसकी सहायता नहीं की। मेले में आए लोगों ने जानवरों को रोटी के टुकड़े दिए, लेकिन उस भिखारी की ओर देखा तक नहीं। लेखक के इस कथन से समाज में भिखारियों को हाशिया में रखने वाली की मानसिकता का चित्रण मिलता है कि: माघमेला की उस भीड़ में किसी–किसी ने उस भिखारी की उपस्थिति पर आपत्ति भी की, पर वह मेला था। पुण्य का क्षेत्र था और पुण्य कमाने का छोटे–बड़े सबको समानाधिकार प्राप्त है। हां, मनुष्य स्वयं अपने को उस भिखारी से दूर रख सकता था।[3]
यदि चन्द गरीब व्यक्ति शारीरिक रूप से दुर्बल और रोग–ग्रस्त होने के कारण भीख मांगने के लिए विवश हो जाते हैं, तो चन्द अमीरों के अत्याचारों के कारण भी भिक्षावृत्ति करने पर मजबूर कर दिए जाते हैं। वर्मा जी की कहानी कुंवर साहब का कुत्ता का गरीब युवा जब खेत की जुताई के बाद मजदूरी मांगता है तो रईज़ कुंवर साहब उसे नहीं देता है और उसकी खूब पिटाई करता है जिसके कारण वह भीख मांगने के लिए विवश हो जाता है। उसकी यह विवशता रईज़ के इस कथन से स्पष्ट होता है किरू होता क्या, साले पर वह मार पड़ी कि पन्द्रह दिन तक चारपाई सेंकता रहा। इसके बाद बेदखल कर दिया। अब कहीं भीख मांगता होगा, लेकिन मुझे तो आपको यह बतलाना था इन्सान कितना नमकहराम होता है।[4]
बेगारी की समस्या हमारे देश में स्वतंत्रता के बाद भी पूरी तरह से मिटी नहीं है। यद्यपि बेगारी कानूनी अपराध है, फिर भी आज विशेषतया ग्रामीण क्षेत्रों में गरीब, अशिक्षित लोग इसका शिकार हो रहे हैं। वे विवश होकर न्यूनतम् वेतन से भी कम मजदूरी प्राप्त कर रहे हैं। कहानी कुंवर साहब का कुत्ता का निरंजन शिक्षित बेरोजगार युवक है। जब वह अपने गाँव लोगों को बेगारी करते हुए देखता है, तब वह उनके प्रति संवेदना प्रकट करता है। वह इन शोषित वर्ग के विरोध में कुंवर साहब से आक्रोशित होकर कहता है कि: जी हाँ, नमकहरामी तो इन्सान के हक में पड़ी, लेकिन मुसीबत तो यह है कि भगवान ने प्रत्येक मनुष्य को एक प्रकार का ही हाड़ – मांस दिया है, उसको भावनाएँ दी हैं, उसे अनुचित–उचित का ज्ञान दिया है। जब आप अपने को उस खिदमतगार या उस बेगारी के स्थान में रखें, तब आपको उसके दुख–दर्द का पता चलें।[5] निरंजन के इस कथन से समाज में आर्थिक असमानता के कारण बेगार करने वाले लोगों पर होने वाले अत्याचार का परिचय मिलता है।
औद्योगिकीकरण और शहरीकरण ने लाखों ग्रामीण युवाओं को जिन्दगी सँवारने का मौका दिया है। वे नौकरी की तलाश में

घर–परिवार छोड़कर प्रवास करते हैं। लेकिन वास्तविक जीवन की पहचान होने पर उन्हें निराश होना पड़ रहा है। उन्हें आवास, मजदूरी, और महँगाई की समस्या से जूझना पड़ता है जो स्वाभाविक है। लेकिन जब ऐसे बेरोजगार ग्रामीण युवा जो जिन्दगी सँवारने की दृष्टि से गाँव से शहर जाने की सोच रखता है और उसे दूसरों से सहानुभूति और संवेदना नहीं मिलती तो उसका जीवन नरक बन जाता है। वह ऐसे में नये स्थान और नये लोगों के बीच में अपने आपको अकेला मेहसूस करता है। ऐसे ही संवेदनशील युवा का चित्रण कहानी खिलावन का नरक में किया गया है। इस कहानी का खिलावन अपने परिवार को छोड़कर मुंबई के कारखाने में मजदूरी करता है। उस खारखाने में हड़ताल होने पर उसे छ: महीने से मजदूरी नहीं मिलती है। वह अपना मकान का किराया नहीं दे पाता है । मकान मालिक उसे किराया न देने पर जेल भिजवाने की धमकी देता है। वहाँ पर उसकी सहायता करने कोई आगे नही आता है। ऐसे निस्सहाय स्थिति में वह घर लौटने का निर्णय लेता है। उसके इस कथन से बेरोजगार ग्रामीण युवा का दयनीय स्थिति का चित्रण मिलता है कि: दो महीने की हड़ताल में, जो कुछ बचाया था, वह स्वाहा हो गया। मकान मालिक जेल भिजवा रहा था, कपड़ा–लत्ता उसी कोठरी में छोड़कर अपनी जान बचाकर वह भागा था। आखिर वह घर में क्या कहेगा।[6]

गरीबी को हटाने के लिए धनवान व्यक्ति को उनके दुख–दर्द को समझकर उनकी सहायता करनी चाहिए। उनकी मजबूरियों का फायदा नहीं उठाना चाहिए। कहानी खिलावन का नरक में की गरीब युवा खिलावन अपनी पत्नी सुखिया को माता–पिता और भाई को छोड़कर नौकरी करने मुंबई चला जाता है। हर महीना पैसे भेजने वाला खिलावन हड़ताल के कारण पैसे भेज नहीं पाता है। ऐसे में उसके परिवार का जीवनयापन कठिन हो जाता है। उसकी पत्नी सहायता के लिए जिलेदार के पास जाती है, लेकिन वह उसके मजबूरियों का लाभ उठाकर उसे पैसों का लालच देकर अपने प्रभाव में रखना चाहता है। उसके कहे गए इस कथन से गरीबों के साथ खिलवाड़ करने वाले शोषक और चरित्रहीन जिलेदार का परिचय मिलता है कि: इहां घर मां सब भूखन मरत हैं, तुम्हारे पाँच सौ रुपैया से आज खाना मिला है, और कुछ रुककर स्त्री ने कहा, "हमारे देवर का एक–आध बीघा ज़मीन दिवाय देय। जिलेदार आप तो इतनी नहीं करि सकत हो।"[7]

व्यक्ति में दूसरों के प्रति सहानुभूति और परोपकार के गुण हों या न हों, उसमें धन, सौन्दर्य और ओहदा के अहंकार के कारण किसी को भी उपेक्षित करने, अपमानित करने या धोखा देने की भावना नहीं होनी चाहिए। दूसरों की भावनाओं से खेलना और उन्हें मानसिक रूप से आहत करना किसी अपराध से कम नहीं है। वर्मा जी ने अपनी कहानी उत्तरदायित्व में ऐसी ही एक अमीर युवती का चित्रण किया है। इस कहानी की युवती शीला को अपनी सुन्दरता और अमीरी पर इतना घमंड है कि वह कई गरीब युवकों से प्रेम का नाटक करती है और उन्हें धोखे में रखती है। इन लड़को में गरीब राजेश अधिक भावुक प्रवृत्ति का है और वह उसकी धोखाधड़ी सह नहीं पाता। क्योंकि वह शीला के प्रेम को सच्चा समझता रहा। वह उसके लिए ट्यूशन की कमाई से कीमती

चीज़े लाता रहा और शीला भी उसकी आर्थिक स्थिति जानते हुए उन उपहारों को स्वीकारती रही। लेकिन जब गरीब राजेश को सच्चाई का पता चलता है, तो वह उसे बर्दाश्त नहीं कर पाता और आत्महत्या कर लेता है। जब राजेश का दोस्त शीला को उसकी आत्महत्या के बारे में बताता है, तो शीला उसकी मृत्यु का उत्तरदायित्व स्वयं राजेश पर डाल देती है और अन्य लड़कों के साथ घूमना–फिरना अपने स्वाभाविक व्यवहार का हिस्सा कहती है। इस पर उसका दोस्त क्रोधित होकर कहता है किरू ऐसी हालत में क्या आप बतला सकेंगी कि आपने उसके कीमती उपहार क्यों स्वीकार किए? रक्त से कमाए हुए उसके कुछ चाँदी के टुकड़ों को आपने सिनेमा देखकर और होटल में खाना खाकर बेरहमी के साथ क्यों खर्च किया?[8] उसके इस कथन से अमीर युवतियों की अय्याशी के कारण गरीब युवा पर किए गए अत्याचारों का परिचय मिलता है।

रिश्वतखोरी एक कानूनी अपराध है। समाज पर, विशेषतया निर्धन वर्ग पर, इसका प्रभाव अधिक पड़ता है। क्योंकि यह वर्ग अन्य वर्गों की तरह अपने काम निकलवाने के लिए रिश्वत नहीं दे पाता। वे रिश्वतखोरी के कारण सुखमय जीवन जीने के अवसर से वंचित रह जाते हैं। कहानी कुंवर साहब का कुत्ता का बेगार मजदूर, बेगारी व्यवस्था के विरोध में, वहाँ आए कमिश्नर साहब से शिकायत करने की साहस जुटाता है, लेकिन उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता। क्योंकि कमिश्नर रईज़ कुंवर साहब का चाटुकार था। उसने रिश्वत देकर कमिश्नर को चुप कर दिया था। रईज़ कुंवर साहब का यह कथन कार्यपालिका को रिश्वत देकर गरीब बेगार का शोषण करने वाले संवेदन–हीन जमींदार का परिचय देता है कि: तो जनाब जब कमिश्नर साहब चलने लगे तो एक लौंडा उन बेगारियों के बीच से निकलकर कमिश्नर साहब के सामने खड़ा हो गया और ऐंडी–बेंडी शिकायतें करने लगा। वह तो मेरा मामला था कमिश्नर साहब ने सुनी–अनसुनी कर दी और चले गए।[9]

भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में सामाजिक व्यवस्था के संचालन और नैतिक मूल्यों की रक्षा के लिए विधायिका, न्यायपालिका, कार्यपालिका और पत्रकारिता को लोकतंत्र के चार स्तम्भ माना गया हैं। लेकिन जब ये स्तंभ अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से नहीं निभाते है तो समाज और देश दोनों पतन की ओर अग्रसर होने लगते हैं। भगवतीचरण वर्मा की कहानियों में न्याय व्यवस्था में व्याप्त रिश्वतखोरी और उसके प्रभाव में पड़ने वाले गरीब व्यक्ति का यथार्थ मिलता है। कहानी कायरता का गरीब रामेश्वर अपने बड़े भाई की अकस्मात् मृत्यु के बाद उनकी सम्पति में हिस्सा पाने के लिए न्यायालय में मुकदमा दायर करता है। लेकिन उसकी भाभी वकील को रिश्वत देती है और ग्राम न्यायालय में यह निर्णय बताया जाता है कि भाभी की मृत्यु के बाद उसे सम्पत्ति मिलेगी । तीस साल के बाद उसकी भाभी की मृत्यु हो जाती है। वह सम्पत्ति प्राप्त करने आता है तो देखता है कि भाभी ने सारी सम्पत्ति उसके गोद लिए बेटे परमानंद के नाम कर दिया था। परमानंद जज को रिश्वत देता है और रामेश्वर को सम्पत्ति मिलने से वंचित कर देता है। गरीब के अधिकार को छीनने और उन्हें तड़पते देखकर खुश होने वाले रिश्वतखोरी व्यक्ति का परिचय इस कथन से मिलता है कि: मैं हाइकोर्ट से जीत सकता हूँ, पर हाइकोर्ट तक लड़ने के लिए मुझ में सामर्थ्य नहीं है। यह बात मैं ही नहीं जानता हूँ, इसे परमानंद भी जानता है और वे जज साहब भी जानते है, जिन्होंने रिश्वत ली हैं।[10]

निष्कर्ष

उक्त कहानियों में सामाजिक और आर्थिक वर्गभेद के कारण उपेक्षित निम्नवर्ग की पीड़ा का यथार्थ चित्रण हुआ है। लेखक भगवतीचरण वर्मा ने निम्नवर्ग के भिक्षुकों, बेगार मजदूरों, बेरोजगारों और निर्धन लोगों की गंभीर समस्याओं का भावनात्मक चित्रण किया है। उनका उद्देश्य केवल इन समस्याओं को उजागर करना ही नहीं, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति के भीतर मानवीय संवेदनाओं को जागृत कराना भी रहा है। इन कहानियों में समस्याओं का समाधान प्रत्यक्ष रूप में नहीं मिलता है, लेकिन इनमें सामाजिक चेतना है। लेखक ने समाज द्वारा निर्मित असमानताओं के बीच मानवता की आवश्यकता को प्रतिपादित किया है।

संदर्भ सूची

1. पृ. संख्या 140, साहित्य की मान्यताएँ, भगवतीचरण वर्मा, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद,
2. प्रथम संस्करण 1962.
3. पृ. संख्या 11, भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों में कथा–कला, वन्दना श्रीवास्तव, संजय बुक
4. सेंटर, के.38/6 गोलघर, वारणासी – 1, प्रथम संस्करण 1998.
5. पृ. संख्या 4, दो बाँके, श्री भगवतीचरण वर्मा, भारती भण्डार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, प्रथम
6. संस्करण 1998.
7. पृ. संख्या 56, वही....
8. पृ. संख्या 56, वही....
9. पृ. संख्या 46, मेरी प्रिय कहानियाँ, भगवतीचरण वर्मा, राजपाल एण्ड सन्ज़, 1590, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली – 110006, संस्करण 2014.
10. पृ. संख्या 48, वही....
11. पृ. संख्या 56, वही...
12. पृ. संख्या 56, दो बाँके, श्री भगवतीचरण वर्मा, भारती भण्डार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, प्रथम
13. संस्करण 1998.
14. पृ. संख्या 26, वही.....